रक्षाबन्धन के सम्मान में

प्रेम का बन्धन, संरक्षण का वचन

फाल्गुनी फ़्रीमॅन द्वारा लिखित

श्रावण मास, भारत में वर्षा का माह [जो ग्रैगोरियन कैलेन्डर के अनुसार जुलाई और अगस्त में आता है], वह समय है जब धरती, वर्षा की भीनी-भीनी, सौंधी-सौंधी खुशबू से महक उठती है। पेड़ों के भीगे हुए पत्ते सूर्य की किरणों से चमचमाते हैं और सब कुछ कितना हरा-भरा, कैसा खिला-खिला-सा हो जाता है। नवीनीकरण के इसी समय में, श्रावण पूर्णिमा के दिन लोग रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाते हैं, वे जिनसे प्रेम करते हैं और जिनकी परवाह करते हैं, उनके साथ अपने सम्बन्ध को नएपन से भर देते हैं और इस रिश्ते का उत्सव मनाते हैं।

भारत में रक्षाबन्धन की सुबह, सब ओर उत्साह का वातावरण होता है। सभी लोग पारम्परिक वेशभूषा पहनते हैं; प्रेम और उत्साह के साथ चटकीले रंगों से रंगोलियाँ बनाई जाती हैं। जब सभी इस पर्व की तैयारी कर रहे होते हैं तब मिठाइयों और स्वादिष्ट व्यंजनों की खुशबू और ताज़े फूलों की मन्त्रमुग्ध कर देने वाली सुगन्ध से सारा वातावरण भर उठता है। भारत में, परम्परानुसार रक्षाबन्धन के दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं। राखी, प्रेम के उनके अटूट सम्बन्ध का प्रतीक है जो संरक्षण प्रदान करता है।

बहन आरती की थाली तैयार करती है जो फूलों, राखियों और भाई-बहन की मनपसन्द मिठाइयों से सजी होती है। भाई, विशेषरूप से तैयार किए गए लकड़ी के पाट पर बैठता है जिसके चारों ओर ज़मीन पर रंगोली बनाई गई होती है। भाई के बैठने के बाद, बहन आगे आकर भाई को कुमकुम का टीका लगाती है और उसकी कलाई पर राखी बाँधती है। फिर वह उसे मिठाई खिलाती है और भाई भी अपनी बहन को मिठाई खिलाता है [जिन भाइयों की कई सगी और रिश्ते की बहनें होती हैं, उनके लिए तो इस दिन पर मिठाइयों की भरमार होती है!]। इस दिन बहन, अपने भाई के जीवन में प्रचुरता, सुख-समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करती है। फिर भाई अपनी बहन को धन के रूप में उपहार देता है जो इस बात का प्रतीक होता है कि भाई हमेशा अपनी बहन की रक्षा करेगा और उसका साथ देगा।

ऐतिहासिक तौर पर देखें तो, रक्षाबन्धन का भाव परिवार के दायरे से भी बढ़कर रहा है। उदाहरण के लिए, कहा जाता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में भारत के राजस्थान की महारानी कर्णावती ने अपने पति के गुज़र जाने के बाद मुग़ल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर उनसे अपने राज्य की रक्षा करने

की विनती की। उस समय भारत के अधिकांश भूक्षेत्र पर बादशाह हुमायूँ का शासन था। महारानी कर्णावती की विनती पाकर बादशाह हुमायूँ ने उनके राज्य की रक्षा हेतु अपनी सेना भेजी और इस तरह इस सामान्य-से प्रतीत होने वाले धागे से जुड़ी भावना का मान रखा।

वर्षों से भारत के महान नेतृत्वकर्ताओं ने लोगों को एक-साथ लाने के लिए राखियों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया है जिससे लोग भेदभाव व अपने मनमुटाव को भूलकर एक-साथ आ जाएँ। भारत में यह महत्त्वपूर्ण रहा है क्योंकि इस भूमि की विविधताओं में सम्मिलित हैं—यहाँ की बहुसंख्य जातियाँ, पन्थ, धर्म, आस्थाएँ और वर्ग।

बहुत-से लोग प्रकृति को भी भेंट अर्पित करते हैं और उससे संरक्षण हेतु प्रार्थना करते हैं। वे वृक्षों, पौधों और लताओं को राखियाँ बाँधते हैं और इस प्रकार वे मनुष्य व उसके प्राकृतिक वातावरण के बीच के अमिट सम्बन्ध का सम्मान करते हैं। भारत के एक महान कवि, श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर, राखी द्वारा प्रकृति का सम्मान इस प्रकार करते हैं :

धरती की छाया और प्रकाश के लिए
युगों-युगों से रहा है प्रेम
मेरे तन-मन में।
अपनी करुणा व आशा को
समस्त नील-आकाश में
इसने बिखेर दिया है
अपनी ही भाषा में।
आने वाले कल की कलाई पर
राखी के धागे की तरह,
बसता है यह मेरे सुख में और दुःख में
वासन्ती रात्रि में पुष्पित कलियों में और फूलों में।[१]

मेरे लिए राखी एकता का प्रतीक है। राखी यह याद दिलाती है कि समस्त मानवजाति आपस में जुड़ी हुई है। जिस तरह राखी के रंगबिरंगे धागे एक-साथ गुँथकर, एक सूत्र में बँधे होते हैं, उसी तरह अलग-अलग संस्कृतियों के अनगिनत रंगों को भी एक-साथ गुँथा जा सकता है। रक्षाबन्धन और एक सादी-सी दिखने वाली राखी हमें इस बात का स्मरण कराते हैं कि मानवता का, एक-दूसरे का, और इस अनमोल ग्रह का संरक्षण करने की हमारी वचनबद्धता का सम्मान करना कितना महत्त्वपूर्ण है।

सिद्धयोग पथ पर, रक्षाबन्धन का विशेष महत्त्व है क्योंकि यह श्रीगुरु और शिष्य के बीच के प्रेम के बन्धन का, और साथ ही इस प्रेम के बन्धन से संरक्षण की जो चादर बुनती है, उसका सम्मान करने

का एक सुअवसर है। मुझे इस बात पर विचार करना अच्छा लगता है कि धागों के कई सारे तानों-बानों से इस शाश्वत सम्बन्ध की रचना होती है और इसे सशक्त बनाए रखा जाता है। शिष्य के धागे हैं, वचनबद्धता, खुलापन, विश्वास, समर्पण, एकाग्रचित्तता, संकल्पबद्धता, श्रद्धा और गुरुभक्ति। स्वप्रयत्न के ये धागे श्रीगुरु की कृपा, करुणा, हितैषिता, अहैतुकी प्रेम और इस कामना के धागों में गुँथ जाते हैं कि शिष्य अपने अन्तर में विद्यमान परमोच्च का अनुभव करे—अपनी पूर्ण सामर्थ्य का अनुभव करे और स्वात्मा के बोध में लीन होकर अपना जीवन व्यतीत करे। इस प्रकार गुरु व शिष्य के धागे आपस में गुँथ जाते हैं। जब शिष्य सिद्धयोग की सिखावनियों व अभ्यासों को तत्परता से करते हुए साधना करता है तब श्रीगुरु के साथ एक शक्तिशाली, चिरस्थायी सम्बन्ध स्थापित होने के साथ-साथ और भी गहरा व मज़बूत होता है।

श्रीगुरु का प्रेम शिष्य को प्रोत्साहित करता है कि वह मुक्ति के मार्ग पर चलते हुए अपना सर्वोच्च प्रयत्न करे; मुक्ति वह लक्ष्य है जिसकी ओर श्रीगुरु उसे मार्गदर्शित करते हैं। जब साधक इस मार्ग पर आगे बढ़ता है तो श्रीगुरु का संरक्षण हर क़दम पर उसका महानतम सम्बल बनता है। एक शिष्य के रूप में आपने कितनी बार अपने अन्दर श्रीगुरु की उपस्थिति का अनुभव किया है, जिससे आपको स्पष्ट रूप से मार्गदर्शन मिलता है, सम्बल मिलता है और आपकी दृष्टि व समझ रूपान्तरित होती है? हम इस अन्तर-उपस्थिति के प्रति जागरूकता को, अपने अन्दर वास कर रहे इस गुरुतत्त्व के प्रति जागरूकता को कैसे बनाए रखें? ऐसा करने का एक तरीक़ा है कि हम इस बात के प्रति सजग रहें कि हमारे विचारों में शुद्धता हो, सच्चाई हो; हम इस बात के प्रति सतर्क बने रहें कि हम अपने मन में व अपने हृदय में कैसी बातें आने दें और हम कैसे शब्द बोलें। इस प्रकार, हम श्रीगुरु की उपस्थिति के बोध का संरक्षण करते हैं; यह उपस्थिति जो हमारे अन्तर में जीवन्त है।

रक्षा करने का एक और तरीक़ा जो हम अपना सकते हैं वह है, सिद्धयोग पथ की धरोहर का परिरक्षण करना। ऐसा करने के लिए—हम सिद्धयोग की सिखावनियों को जीवन में उतारने के अपने अनुभव एक-दूसरे को बता सकते हैं; एक-दूसरे को, अपने परिवार को, अपने बच्चों को यह बता सकते हैं कि कैसे श्रीगुरुमाई की कृपा व मार्गदर्शन की शक्ति से हमारा जीवन रूपान्तरित हुआ है। और, हृदय को खोल देने वाले दक्षिणा के अभ्यास द्वारा हम सिद्धयोग पथ के प्रति अपनी वचनबद्धता को दृढ़ बनाकर ऐसा कर सकते हैं।

रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाते समय हम अनगिनत तरीक़ों से इस पर्व की भावना का सम्मान कर सकते हैं। मुझे यह सोचकर अच्छा लगता है कि हर बार जब आप आगे बढ़कर अपने हृदय के प्रेम को मुक्त रूप से दूसरों के साथ बाँटते हैं, आप राखी बाँध रहे होते हैं। हर बार जब आप किसी की बात को ध्यान से सुनते हैं, आप राखी बाँध रहे होते हैं। हर बार जब आप गुरुमाई जी के प्रति अपने

प्रेम से जुड़ते हैं, हर बार जब आप सिद्धयोग पथ पर चलने का अपना अनुभव किसी को बताते हैं, हर बार जब आप सिद्धयोग साधना से प्राप्त प्रज्ञान को जीवन में उतारते हैं, आप अपने जीवन में मिलने वाले हर व्यक्ति को राखी बाँध रहे होते हैं। संक्षेप में कहूँ तो, हर बार जब आप सिद्धयोग की सिखावनियों को जीते हैं, आप राखी बाँध रहे होते हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर, *The Jewel That Is Best: Collected Brief Poems,* भाषान्तर : विलियम रैडिस [नई दिल्ली : पैंग्विन, २०११] पृष्ठ. ११८।